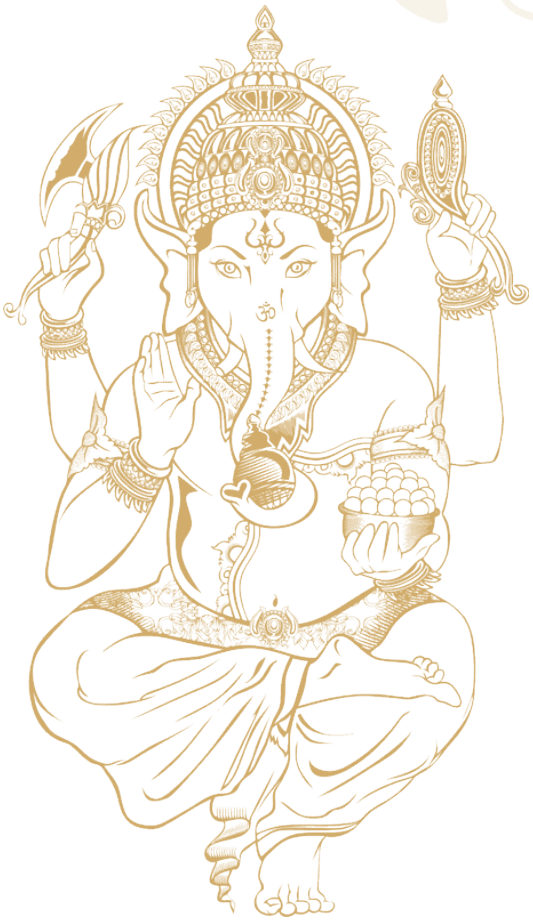

19 Feb 2026

08:43 AM

Kathmandu

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121355801

तिथि 19/02/2026 **समय** 08:43:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Kathmandu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:27
अक्षांश 27:05:00 उत्तर **रेखांश** 85:04:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 86:15:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:44 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	18:34:35 घं
वेलान्तर	00:13:50 घं
सूर्योदय	06:38:28 घं
सूर्यास्त	17:59:02 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	फाल्गुन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	2
नक्षत्र	पू०भाद्रपद
योग	सिद्ध
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सिंह
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	सो-सोमनाथ
पाया(रा.-न.)	लौह-लौह
होरा	सूर्य
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

गुरु 8वर्ष 5मा 7दि

गुरु

19/02/2026
29/07/2034

	00/00/0000
	00/00/0000
	19/02/2026
केतु	10/06/2026
शुक्र	08/02/2029
सूर्य	27/11/2029
चन्द्र	29/03/2031
मंगल	04/03/2032
राहु	29/07/2034

योगिनी

भ्रामरी 2वर्ष 1मा 9दि

भ्रामरी

19/02/2026
30/03/2028

	00/00/0000
	00/00/0000
	19/02/2026
सिद्धा	09/09/2026
संकटा	31/07/2027
मंगला	09/09/2027
पिंगला	30/11/2027
धान्या	30/03/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			17:50:16	मीन	रेवती	1	बुध	बुध	---	0:00			
सूर्य			06:14:34	कुंभ	धनिष्ठा	4	मंगल	चंद्र	शत्रु राशि	1.62	कलत्र	पितृ	मित्र
चंद्र			26:18:09	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	केतु	सम राशि	1.11	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल		अ	26:44:20	मक	धनिष्ठा	2	मंगल	गुरु	उच्च राशि	1.25	आत्मा	भ्रातृ	मित्र
बुध			24:18:54	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	सम राशि	1.08	भ्रातृ	ज्ञाति	जन्म
गुरु	व		21:30:52	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.32	मातृ	धन	जन्म
शुक्र			16:39:31	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	मित्र राशि	0.91	पुत्र	कलत्र	अतिमित्र
शनि			06:20:54	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.23	ज्ञाति	आयु	सम्पत
राहु			14:43:06	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु			14:43:06	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

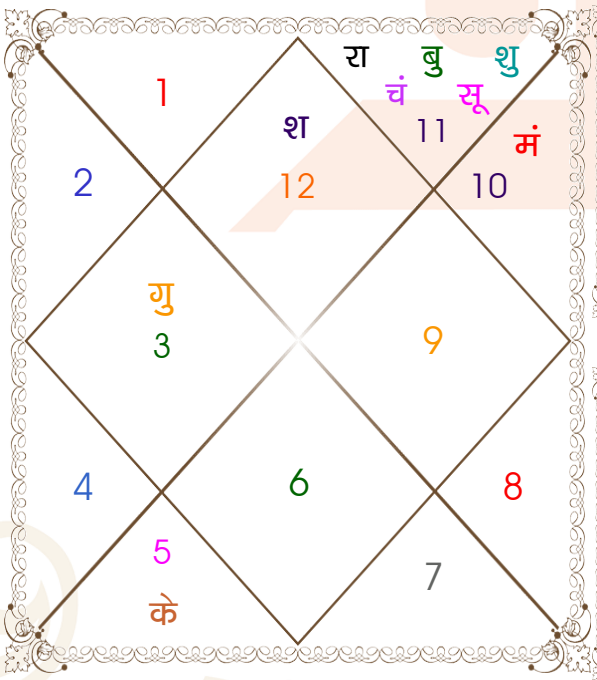

चन्द्र कुंडली

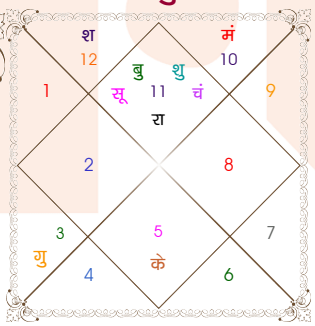

नवमांश कुंडली

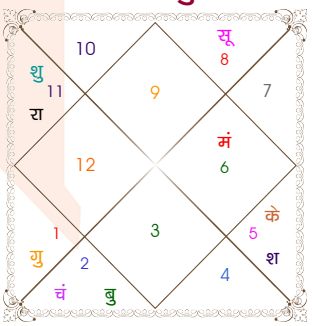

सर्वाष्टकवर्ग

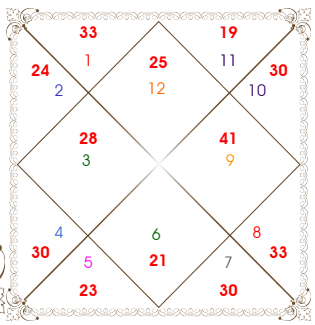

दशमांश कुंडली

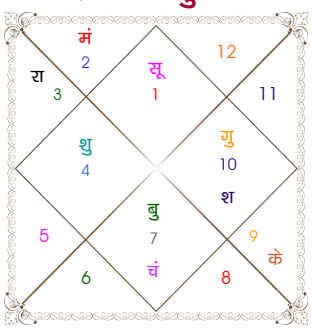

नक्षत्रफल

आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि कुम्भ तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ग मेष, गण मनुष्य, नाड़ी आद्य, योनि सिंह तथा वर्ण शूद्र होगा। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "सो" अक्षर से होगा यथा- सोहन लाल, शोभासिंह आदि।

आप इन्द्रियों को पूर्ण रूप से अपने वश में रखेंगे तथा संयमी पुरूष की तरह जीवन व्यतीत करेंगे। आप नाना प्रकार की कलाओं तथा कार्यों में निपुण रहेंगे। अतः समाज में आपका पूर्ण मान सम्मान रहेगा। आपके शत्रु आपसे सदैव भयभीत एवं पराजित रहेंगे एवं इनको नष्ट करने में आप हमेशा सफल रहेंगे। आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को अपनी ही बुद्धि से सम्पन्न तथा सफल बनाने में सफल रहेंगे। इससे आपको आत्म संतुष्टि रहेगी एवं जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

जितेन्द्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम्।
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक जितेन्द्रिय, समस्त कलाओं में निपुण, शत्रुपक्ष को जीतने वाला तथा बुद्धिमान होता है।

आप जीवन में कभी कभी हृदय से अत्यन्त ही दुःख की अनुभूति भी करेंगे। स्त्री के आप हमेशा पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार या निर्देशानुसार अपने समस्त सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे इनमें स्वतंत्र निर्णय लेने में आप प्रायः असमर्थता का अहसास करेंगे। धनैश्वर्य से आप हमेशा सुशोभित रहेंगे एवं जीवन काल में सुखपूर्वक उसका उपभोग करेंगे लेकिन आप कंजूसी प्रवृति से भी युक्त रहेंगे अतः इससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक चतुर तथा विद्वान पुरूष भी रहेंगे।

भाद्रपदासूद्विग्नः स्त्रीजितधनी पटुरदाता च।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य हृदय से दुःखी, स्त्री के वश में रहने वाला, धनवान चतुर पीड़ित तथा कृपण स्वभाव का होता है।

आपकी वाणी अत्यन्त ही ओजस्वी तथा साहसिक होगी जिससे अन्य लोग आपसे अत्यन्त ही प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। लेकिन आप प्रवृति से डरपोक भी रहेंगे तथा समय कमय पर इससे व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे। परन्तु अन्य सामाजिक जनों से आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहशील एवं मधुर होंगे।

पूर्वप्रोष्ठपदि प्रगल्भवचनो धूर्तोभयार्तो मृदुः।।

अर्थात् पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में पैदा होने वाला पुरूष साहस एवं ओजस्वी वाणी बोलने वाला, धूर्त, भय से व्याकुलता प्राप्त करने वाला तथा मृदुस्वभाव का होता है।

भाषण देने की कला में आप दक्ष रहेंगे एवं अपने ओजस्वी भाषण से सभी लोगों को प्रभावित तथा आकर्षित करने में सफल रहेंगे। जीवन में आवश्यक सुखसंसाधनों का आपके पास अभाव नहीं रहेगा। आप सपरिवार सर्वत्र मान सम्मान एवं आदर प्राप्त करेंगे। परन्तु आपको नींद अधिक मात्रा में आएगी तथा इससे आपमें आलस्य की वृद्धि होगी अतः कभी कभी आप कुछ भी कार्य को करने के योग्य नहीं रहते न ही प्रायः कोई कार्य करेंगे। इससे आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

वक्ता सुखीप्रजायुक्तो बहुनिद्रोनिरर्थकः।
पूर्वभाद्रपदायां च जातो भवति मानवः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ वक्ता, सुखी, सम्मान वाला, अधिक नींद वाला तथा स्वयं किसी कार्य के योग्य नहीं होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नाक ऊंची होगी तथा मुख एवं मस्तक विस्तृत रहेगा। साथ ही हाथ, पैर एवं कटिभाग में स्थूलता का प्रभाव रहेगा। आपके शरीर में रूक्षता का भाव भी रहेगा। लेकिन कृत्रिम उपायों से यह दूर हो जाएगी एवं आपके सौन्दर्य पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप विद्रोही स्वभाव के रहेंगे तथा जीवन में यदा कदा इस भाव का आप प्रदर्शन करते रहेंगे। साथ ही क्रोधाधिक्य भी आप में रहेगा। धर्म के प्रति भी आपकी निष्ठा नहीं रहेगी। साथ ही आलस्य से भी युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त शिल्प या चित्रकारी में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में आप को सफलता एवं ख्याति प्राप्त हो सकेगी। साथ ही कभी कभी आप मानसिक रूप से दुःखानुभूति करेंगे।

उद्घोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।

सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

आप विविध शास्त्रों का अपनी बुद्धि तथा परिश्रम से विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगे तथा समाज में एक विद्वान के रूप में आदरणीय तथा ख्याति प्राप्त होंगे। साथ ही नाना प्रकार के कार्यों को करने में भी आप प्रवीण रहेंगे। आप शान्त प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा उग्र एवं हिंसक भावों का आप में अभाव रहेगा। साथ ही शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त करने तथा उनको भयभीत करने में भी आप सफल रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप कठोर कार्यों को करने में भी रूचिशील रहेंगे या इनको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। यात्रा करने तथा भ्रमण करने में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा इन पर आप अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। दूसरे के धन के प्रति आपके हृदय में लालच का भाव रहेगा तथा इसे प्राप्त करने के लिए भी आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में उतार चढाव आते रहेंगे अतः इस विषमता से आप को कई बार कठिनाई का भी सामना करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त सुगन्धित द्रव्यों का अनुलेपन करने तथा पुष्पादि के प्रति भी आपकी आसक्ति रहेगी तथा इसका आप सामान्यतया प्रयोग करते रहेंगे।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा समाज में आप आदर प्राप्त भी रहेंगे लेकिन अन्य गणमान्य विद्वानों को आप कभी भी यथोचित सम्मान तथा आदर प्रदान नहीं करेंगे। इससे सज्जन लोग आपसे प्रायः अप्रसन्न रहेंगे।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आप जीवन से प्रत्येक क्षेत्र में सामान्यतया सफलता तथा विजय ही प्राप्त करेंगे तथा आपका आचरण भी श्रेष्ठ रहेगा जो अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणनीय रहेगा। धन सम्पत्ति से आप प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे लेकिन यदा कदा इसका आपको अभाव भी रहेगा। गुरूजनों तथा श्रेष्ठ लोगों के प्रति आपके मन में श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा तथा समय समय पर आप इनकी सेवा तथा सहायता करते रहेंगे एवं उनसे पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगे। आपका परिवार भी विशाल रहेगा एवं जाति तथा वर्ग के कल्याणकारी कार्यों को करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको सफल बनाने में अपना प्रमुख योगदान प्रदान

करेंगे इससे जाति तथा धर्म के मध्य आपके सम्मान में वृद्धि होगी एवं वे आपको अत्यन्त ही श्रेष्ठ एवं श्रद्धेय समझेंगे। इस प्रकार विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से युक्त होकर तथा इनका अनुपालन करके आप जीवन में पूर्ण सुखानुभूति प्राप्त करेंगे।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपके गर्दन की लम्बाई सामान्य से अधिक रहेगी तथा शरीर की नसे भी शरीर से बाहर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होंगी। महिला वर्ग से आपके संबंध मित्रतापूर्ण रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण आदर एवं सम्मान भी प्राप्त होगा।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ळध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप स्वभाव से ही दानशीलता के भाव से भी युक्त रहेंगे एवं जीवन में यथाशक्ति इस प्रवृति का अनुपालन करते रहेंगे। इससे आप समाज में सबकी प्रशंसा के पात्र रहेंगे। आप में कृपणता का भाव भी रहेगा एवं अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगे तथा हृदय से आभार भी प्रकट करेंगे। जीवन में आपको विभिन्न प्रकार के वाहन साधनों की भी प्राप्ति होगी एवं सुखपूर्वक आप इनका उपभोग करते रहेंगे। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर होंगी तथा बुद्धि में भी सरलता का भाव रहेगा एवं अन्य जनों से धोखा या प्रपंच की प्रवृति आपकी नहीं रहेगी इस प्रकार अपने स्नेह शील व्यवहार तथा सत्कार्यों से आप समाज में लोकप्रिय रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगे तथा स्वबाहु बल से धनार्जन करके सुखप्राप्त करेंगे।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

मनुष्य गण में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में अनन्य श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा। आपका स्वभाव अभिमानी भी रहेगा अतः समय समय पर आप इसका प्रदर्शन भी करते रहेंगे। आपके मन में दया एवं करूणा की भावना सदैव विद्यमान रहेगी। आप एक बलशाली पुरूष होंगे तथा कई

कार्यों एवं कलाओं के ज्ञाता होंगे। अतः समाज में आप एक आदरणीय एवं सम्मानीय समझे जायेंगे। विविध शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। अतः एक विद्वान के रूप में भी आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। इसके अतिरिक्त आप विभिन्न लोगों को सुख प्रदान करने की भी क्षमता रखेंगे।

समाज में आप हमेशा मान सम्मान से युक्त रहेंगे तथा सर्वप्रकार से धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करेंगे। आपकी आखें बड़ी बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी की कला में निपुणता अर्जित करेंगे। इस क्षेत्र में आप सफलता तथा ख्याति भी प्राप्त कर सकते हैं। शरीर से आपका गौरवर्ण रहेगा तथा नगरवासी हमेशा आपके वश में रहेंगे अर्थात् नगर के आप एक प्रभावशाली गणमान्य व्यक्ति हो सकते हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सिंह योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी एवं धार्मिक वृतियों का आप यत्नपूर्वक पालन करते रहेंगे। आपकी रूचि भी अच्छे कार्यों को करने की ओर अधिक रहेगी तथा यत्नपूर्वक इसके लिए आजीवन आप तत्पर रहेंगे। इस प्रकार अपने इन सत्कार्यों से आप समाज में सम्मान आदर तथा ख्याति अर्जित करेंगे। इसके साथ विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगे एवं इसके अनुपालन के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगे। इसके साथ ही कुल एवं परिवार की चहुमुखी उन्नति तथा समृद्धि करने के लिए आप अपना तन, मन, धन से सहयोग अर्पण करेंगे तथा इस कार्य में पूर्ण रूपेण सफल रहकर पारिवारिक जनों के प्रिय एवं सम्माननीय बनेंगे।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सर्वदा अनिष्टकारी रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग तथा वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रय आदि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक चिन्ताएं, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुका आदि पदार्थों का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं समस्त अशुभ प्रभाव समाप्त होकर शुभ फलों की वृद्धि होगी। साथ ही सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।